वशीकरण प्रयोग के नुस्खे

लघु सूक्ष्मेण लिंगेन नैव तुष्यन्ति योषितः ।
तस्मत्तत्प्रीतये वक्ष्ये स्थूलीकरणमुत्तमम् ॥

अर्थ---छोटे और पतले लिंग से स्त्री प्रसन्न नहीं हुआ करती है। अतः स्त्री जनों को प्रसन्न करने के लिये पुरुषों के लिये अति उत्तम लिङ्ग स्थूली करण नामक प्रयोग वर्णन करता हूँ।

[१]

कूट, छोटी पीपर, दोनों खरैटी, बच, असगन्ध पत्र पीपल, कन्नेर यह सब वस्तुयें समान भाग लेकर कूट-पीसकर मक्खन के साथ मिलाकर लेप करने से काम-ध्वज मूसल के समान कड़ा हो जाता है।

[२]

लोध, केशर, असगंध, पीपल, शालपर्णी यह सब वस्तुयें समान भाग में मिलाकर तेल में पकाकर काम-ध्वज पर लेप करने से वह कामध्वज लम्बाई में बढ़ता है और वह स्त्री जनों के मन को प्रसन्न करता है।

[३]

बच, खरैंटी, पारा यह तीनों वस्तु समान भाग लेकर कूट-पीसकर मिलावे और फिर इसको भैंस के मक्खन

के साथ (मक्खन ताजा इस्तेमाल करें) मिला कर लेप करने से मनुष्य का कामध्वज लोह दण्ड के समान कठोर (दृढ़) हो जाता है। (यह देखा हुआ प्रयोग है।)

[४]

भिलावे की मिंगी, सेवार, कमल का पत्ता, यह सब वस्तुयें अग्नि में जलाकर बराबर भाग लेवें और सेंधा नमक मिलाकर बड़ी कटहली के साथ पानी में मिला कर लेप बनाकर कामध्वज पर लगावें। तो कामध्वज घोड़ा के समान कठोर (दृढ़) और मोटा हो जाता है।

[५]

सुअर की चर्बी के साथ शहद को मिलाकर कामध्वज पर नित्य एक महीने तक लेप करें। तो वह स्थूल, कठोर और लम्बा हो जाता है।

[६]

असगंध, सतावरी, कूट, जटामांसी और कटेहली का फल वह सब समान भाग लेकर किसी बर्तन में रख चौगुने दूध और तिलों के तेल में पका कर रखें। इसको मर्दन और भक्षण करने से स्तन, कामध्वज कान और हाथ इन सबको बृद्धि होती है।

[७]

मूसली के चूर्ण को घी के साथ साथ मिलाकर

लेप करने से कामध्वज में कठोरता उत्पन्न होती है।

[८]

पीपल, सेंधा नमक, दूध, मिश्री इन सबको मिलाकर लेप करने से भी कामध्वज कठोर हो जाता है।

[९]

जटामासी, बहेड़ा, कूट, असगंध, शबारी यह सब वस्तुयें समान भाग लेकर तेल में पकाकर लेप करने से कामध्वज अवश्य स्थूल हो जाता है।

[१०]

पारा, असगंध, हल्दी, गज पीपल और मिश्री यह सब वस्तुये समान भाग लेकर जल के साथ खूब महीन पीसकर (घोटकर) एक महीने तक किसी बर्तन में रखकर मुँह बन्द करके रखा रहने दे। फिर इसका लेप करे तो रति सेवक, कान और स्तनों की वृद्धि हो।

[११]

दोनों हल्दी, कमल, केशर और देवदारु इन सब वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर रति-मन्दिर पर लेप करने से स्त्री का कामाशय संकुचित हो जाता है।

[१२]

धाय के फूल, त्रिफ़ला, (हर्र, बहेड़ा, आंवला)

जामुन बृक्ष की छाल, लोह सार, घी, मुलहठी इन सभी वस्तुओं को कूट-छानकर लेप करने से बूढ़ी स्त्री भी सुकुमारी के समान बन जाया करती है,

[१३]

नील कमल, कटेली, बच, काली मिर्च, कन्नेर आसन हल्दी इन सब वस्तुओं को मिलाकर रतिमन्दिर पर लेप करने से स्त्री का कामालय तुरन्त (तत्काल) संकुचित हो जाता है।

[१४]

वीर बहूटी को पीसकर स्त्री अपनी रति निकेतन पर लेप करे तो, उसका कामालय कठिन और गाढ़ हो जाता है। इसमें संदेह नहीं है।

[१५]

नीम के पत्तों को जल में डाल कर औटाकर काढ़ा बनाके उस काढ़े से रति मन्दिर को धोवे अथवा नीम, हल्दी, घी, काला अगरु और गूगल इन सब बस्तुओं को धूप बनाकर रात में कामालय (रति मन्दिर) को धूप देने से स्त्री पति को प्रसन्न करती है।

[१६]

नीम के पानी में कामालय को स्त्री जन धोकर नीम की छाल का लेप करें तो बहुत काल तक के लिए कामालय की दुर्गन्ध दूर हो जाय, इसमें संशय नहीं है!

[१७]

ढाक की भस्म और हरताल की भस्म को पानी के साथ पीसकर लेप करते रहने से स्त्रियों के कामालय के मैदान में रोम कभी नहीं जमते हैं।

[१८]

हरताल की भस्म १ भाग, शंख की भस्म ५ भाग सब तरू (पिलखन) की भस्म ५ भाग इन सब वस्तुओं को लेकर केले के जल में मिलाकर-सानकर किसी पात्र में रखे और लगातार सात दिन तक इसका कामालय के मैदान पर लेप करे। इससे कभी रोम नहीं जमते हैं।

[१९]

हरताल, शंख चूर्ण, मजीठ केसू की भस्म यह सब वस्तुयें समान भाग लेकर जल के साथ मिलाकर लेप करने से रोम नष्ट हो जाते हैं।

[२०]

उपरोक्त दोनों वस्तुओं को खारे जल के साथ पीसकर धूप में बैठकर लेप करने से शीघ्र ही भग भाग पर उगने वाले रोम उखड़कर अलग हो जाते हैं।

[२१]

सुगाड़ी के पेड़ के पत्तों को काटकर रस निकालकर उसमें गंधक पीसकर धूप में बैठकर लेप करने से काम-

लय के मैदान में जमे रोम शीघ्र ही उड़ जाते हैं।

यद्यप्यष्ट गुणाधिको निगदितं, कार्कोऽगनानां सदा।
नीयतिद्रवता तथापि झटिति स्त्री कामना संगमे ॥
तस्माद्भेषजस प्रयोग विधिना संक्षेपतो द्रावणं।
किंचित्पल्लबयामि नीरजदृशां प्रीत्या परं कामिनाम्।

यद्यपि पुरुषों से स्त्रियों में अठगुना कामवेग होता है, किन्तु फिर भी स्त्रियाँ पुरुष के संगम से शीघ्र स्खलित नहीं होती है। अतः स्त्रियों को स्खलित करने वाली औषधियों का वर्णन संक्षेप में किया जाता है। जिसके द्वारा कामिनियों और कामी जनों को अत्यन्त प्रसन्नता (आनन्द) प्राप्त होती है।

१—सिंदूर, इमली के फूल, शहद इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीसकर लेपकर स्त्री के साथ संगति करे तो स्त्री शीघ्र स्खलित हो जाती है।

२—त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) के चूर्ण को शहद के साथ मिलाकर कामालय के अन्दर रख देवे और फिर पुरुष प्रसंग करे। तो इस योग के कारण स्त्री एकदम द्रवीभूत हो जाती है। यह योगराज सदा सिद्धि देने वाला निहारा गया है।

३—पीपल, चन्दन, कटेहली, पकी इमली इन सब वस्तुओं को लेप कामध्वज के ऊपर करने से स्त्री शीघ्र ही स्खलित हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं।

४—अगस्त के पत्तों का रस निकाल कर उसमें शहद और सुहागा (बोरेक्स) पीसकर मिलावे और इसका लेप बनाकर कामध्वज पर लेप करके जो पुरुष स्त्री के साथ प्रसंग करते हैं, तो इस योग के कारण स्त्री शीघ्र ही स्खलित हो जाती है।

५—लोध, धतूरा, पीपली, कटेहली, पीपल मूढ़ इन सब वस्तुओं का चूर्ण बनाकर शुद्ध शहद के साथ मिलाकर काम पताका पर लेप करने के पश्चात जो मनुष्य स्त्री से प्रसंग करता है, तो स्त्री अत्यन्त शीघ्र स्खलित हो जाती है।

६—उड़द, मिर्च, मुलहठी, पीपल इन सब वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर असगंध के रस के साथ मिला कर पीस लेवे। इस लेप को जो पुरुष अपने कामास्त्र पर लेप करके जिस स्त्री के साथ प्रसंग करे वह स्त्री अति शीघ्र स्खलित हो जाती है।

७—बेल का फूल, मुण्डी का फूल, कपूर इन तीनों औषधियों को बारीक पीसकर कामास्त्र पर लेप करने से प्रसंग करने में स्त्री शीघ्र द्रवित हो जाती है।

८—केतकी के फल और जड़ तथा पीपल, काली-मिर्च, शहद, गोरोचन इन सब वस्तुओं का लेप बना-कर कामास्त्र पर लेप लगाने से स्त्री स्खलित हो जाती है।

९—काली मिर्च,धतूरे के बीज,पीपर लोध इन सब को पीसकर महीन चूर्ण बनाकर शुद्ध शहद के साथ मिलाकर कामपताका पर लेप करे तो कामी पुरुष रति युद्ध में कष्ट से जीतने योग्य स्त्री को भी अवश्य पराजित कर सकता है।

नोट-उपरोक्त नौ योग स्खलित करने के लिखे गये हैं इन सबको करने से प्रथम लेप आदि को नीचे लिखे इस मन्त्र से योग सिद्धि के लिये १०८ बार जप कर अभिमंत्रित करके प्रयोग करे। मंत्र यह है।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय। स्त्रीण मद द्रावय द्रावय ठः ङः इति द्रावणम॥

नोट—इस पुस्तक के अन्दर जितने तंत्र-मंत्र-यन्त्र आदि अथवा औषधियों के योग जो लिखे गये हैं वह सब इन्द्रजाल व दत्तात्रेय तंत्र आदि पुस्तकों में से अनुवाद करके संग्रह किये गये हैं। इनमें अनेक प्रयोग आयुर्वेद ग्रंथों से संग्रहीत किये गये प्रतीत होते हैं—अथवा यह भी संभव है कि किसी अन्य यन्त्रान्तर से इस प्रकार की तांत्रिक पुस्तकों में लिये गये हों। यह संग्रह प्राचीन हस्त लिखित प्रतियों में भी प्राप्त होता है। अतः हमने भी कुछ तब्दीली न करके अनुवादित करके संग्रहीत कर इस पुस्तक में संग्रहीत

किया है। इसी लिये हमने ज्यों का त्यों यहाँ पर रख दिया है।

इस प्रकार के योग जिनमें कि औषधियों का वर्णन दिया गया है, यह कुछ तांत्रिक ग्रन्थों की रचना से भिन्न प्रकार की होती हैं। जिन उपरोक्त बड़ी पुस्तकों से इनको संग्रहीत किया गया है, ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब आयुर्वेद के ग्रन्थों से संग्रहीत किये गये हैं, क्योंकि तंत्रों के श्लोकों की रचना कुछ विलक्षण होती है। यह सब वैलक्षण्य तांत्रिक की भाषा का ही है। जैसे हुनेत-खाने-सांपिष्ठा वैष्णव तंत्रों में भी हुनेत क्रिया पद है। जो जुहुयात के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। इसके लिए प्राचीन हस्त लिखित प्रति में स्तनों ष्यारत्यतितौ न चैव, ऐसा पाठान्तर है।

जिस स्थान पर चूर्ण आदि का प्रयोग सिर आदि पर डालना लिखा गया है। उसके लिंये—किसी प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में तो शिरसोपरि—ऐसा पाठ है और किसी में मस्तकोपरि ऐसा पाठ है। उत्तमांग'शिरशीर्षमूर्धानामास्तकोऽस्त्रियाम'इत्याम'इत्यमरः

अथ स्तन दृढ़ीकरणं स्तनवर्द्धनं च

अब प्रसंग वश ग्रन्थान्तर से स्तनों के दृढ़ करने तथा बढ़ाने का प्रयोग कहते हैं।

१—अन्डी का तेल, मछली का तेल, कच्चे बेल का रस इन तीनों को मिलाकर स्तनों पर मर्दन करने से स्तन नवीन हो जाते हैं।

२—खंभीरा का रस और कैकड़ा को मिलाकर तेल में डालकर पकावे। फिर उस तेल को ठन्डा करने के पश्चात् यदि स्त्री अपने स्तनों पर लगावे तो स्तन कठिन और पुष्ट हो जाते हैं और गिरे हुए स्तन उठ आते हैं।

३—बूढ़ी स्त्री या कन्या के स्तन यदि ढीले हो गये हों तो सफेद मोथा के फूल गौ के दूध के साथ मिलाकर खूब महीन पीस लेवे और उनको स्तनों पर मले अर्थात् दोनों स्तनों के ऊपर उपरोक्त पिसी हुई औषधि का लेप करे तो वे स्तन जो ढीले हो गये हैं, पुष्ट हो जाते हैं।

४—बच, असगंध के पत्ते, गज, पीपल इन सब वस्तुओं को सम भाग मिलाकर निर्मल (स्वच्छ) जल (पानी) से पीसकर विधियुक्त स्तन मन्डल पर लेप करे। इस लेप के करने से गिरे हुए स्तन आम के फल तथा ताल फल के समान ऊँचे उठ आते हैं।

६—गँभीरी के पत्तों का रस निकाल कर जितना रस हो उतना ही तिल का तेल लेबे और

फिर इन दोनों के बराबर ही जल ले ले। फिर इन सबको अर्थात् गंभीरा के पत्तों का रस और तिल का तेल कड़ाही में डाल आग के ऊपर रखकर औंटा लेवे जब यह रसायन औटते-औटते पानी और रस जलकर केवल तेल मात्रा ही शेष रहे। तब उस तेल को निकाल कर किसी बर्तन में (शीशी में) भरकर रख लेवे। इस तेल को स्तनों पर लेप करे तो स्तन लोहे के समान कड़े हो जाँय।

लाल स्याही बनाने की रीति

सज्जी, ऐलूआ और कत्था इन तीनों को मँगाकर अलग अलग कूट कर पानी में मिला कर ताँबे से बर्तन में कत्था का पानी चूल्हे पर चढ़ा दो और नीचे आग जला दो। जब उबाल आने लगे तब सज्जी का पानी और ऐलूआ उसमें मिला दो, जब तीनों एक हो जायें तब नीचे उतार लो इस प्रकार लाल स्याही तैयार होगी।

अंग्रेजी नीली स्याही

सल्फेट और इंडिगो को पानी में घोलने से नीली स्याही बन जाती है, यदि रंग गहरा न चाहो तो पानी अधिक डाल कर पतली कर लो।

हरी स्याही

मैथालय ग्रीन डब्ल्यू एस० ६६ ग्रेन, शुगर १६२२ ग्रेन, डिस्टिल्ड वाटर १६१।। ग्रेन, सबको मिला कर १ औंस ठंडे पानी में डालिये और दो घंटे तक एक तरफ रख दीजिये, फिर उसमें पानी मिला दीजिये. जब कुछ गरम हो, तब उसमें खाँड डालिये और उसे तब तक हिलाइये, जब तक कि वह सब घुलकर एक रस न हो जाए। बस फाउन्टेन पेन की हरी स्याही बनकर तैयार हो जायेगी।

पत्थर पर सुनहरी मुलम्मा

शोरा छह भाग, एलुआ रेजिया छत्तीस भाग में गलाकर एक भाग रांगा साफ मलकर सलफर तीन भाग, आयल आफ टरपेन्टायन में मिलाकर धीरे-धीरे खरल में घोटा जाये यहाँ तक खरल में घोटा जाए कि सख्त हो जाय फिर उसमें आइल आफ टरपेन्टाइन चार भाग मिलाकर काम में लावें।

बिना कल चाँदी का मुलम्मा

दो तोले नाइट्रेट सिलवर को पानी में भिगो दो जब गल जावे उसमें हाइपोसलफेट डाल दो जब यह भी गल जावे तो पानी में स्पंज भिगोकर जिस चीज पर

मुलम्मा करना चाहो उस पर खूब रगड़ो थोड़ी देर में चांदी का बहुत उम्दा मुलम्मा बन जायेगा।

सोने की चीज को चमकाना

गेरू दो हिस्सा नौसादर एक हिस्सा। दोनों को पानी के साथ पत्थर पर पोतो फिर सोने की चीजों पर लगाकर आग पर रखकर सुखा लो। धुआं बन्द होने पर निकाल कर ठंडे पानी में बुझाओ फिर साफ पानी से धोकर और पिसे गेरू में घिसकर उस चीजों पर लगाओ और आग पर सुखाओ फिर बुरश या साफ कपड़े से पोछ कर चमका दो।

नीलम बनाना

पोटाश ४६०८ ग्रेन तथा आक्साइड आफ कोबाल्ट ३८ ग्रेन दोनों को मिलाकर आग पर चढ़ा दो तो नीलम बन चमका दी।

हीरा बनाना

सिलिका आठ औंस, कारबोनाइट आफ पुटाश २४ औंस, दोनों को मिलाकर गरम कर लो फिर ठंडी करके उसको डाइल्यूटेड नाइट्रिक ऐसिड में डाल दो, जब खदकना बन्द हो जाय तो पानी को ऐसिड से धो डालो तथा सुखा कर कारब्रोटेड बारह औंस मिला लो

और एक औंस सुहागा मिलाकर चीनी के खरल में घोट डालो और गरम करके दो तीन बार बुझा लो अन्त में शोरा डाल कर रख दो। बस हीरा बन जायेगा।

फिरोजा बनाना

आक्साइड आफ कोवाल्ट दस ग्रेन, ग्लास आफ ऐन्टीमनी २४ ग्रेन, पोटाश ३१ ग्रेन इन सबको आग पर पिघला कर ठंडा कर लो, बस फिरोजा बनाने की यह सरल रीति है।

पुखराज बनाना

पोटाश १०५ ग्रेन, ग्लास आफ एन्टीमनी ४० ग्रेन, एपिल आफ केस एक ग्रेन, इन सबको आग पर चढ़ा दो तो पुखराज बन जायेगा।

नेवला दिखाई देना

मङ्गलवार के दिन मरे हुए नेवले के मुख में कपास का बीज लाकर दे फिर निकालकर बो दे उससे जो रूई पैदा हो उसकी बत्ती बनाकर रात्रि में जलावे तो चारों ओर नेवले ही नेवले दिखाई देंगे।

बिना आग का ज्वार भूनना

थू के दूध में थोड़ी सी ज्वार भिगोकर छाया में सुखाकर रख लो जब खेल दिखाना हो तब उसको धूप

दिखाओ तो वह खिल उठेगी। ऐसा मेरा पक्का विश्वास है।

गरम जंजीर को हाथ से खींचना

पहले हाथों में घीग्वार का अर्क या मुर्गी के अंडे की जर्दी या मुलहठी पानी में घिसकर लगा लो। फिर जंजीर खूब गरम करके किसी जगह पर लटका दो, फिर थोड़ा सा तेल उस पर छोड़ दो फिर पोले-पोले हाथ से खींचो हाथ कभी न जलेगा।

बिना रंग के पानी को नीला करना

एक पानी भरे गिलास में पीसंयेट अ[illegible]श की थोड़ी-सी बूँद डाल दो, दूसरे में सल्फेट तथा आयरन को डाल दो। अब दोनों गिलासों को एक जगह मिला दीजिये तो गहरा नीला रङ्ग बन जायेगा।

सोने के वर्क बनाना

असली सोना लाकर बारीक तार खिंचवा लो तथा जितना चाहो उतने-उतने वजन के साँचे में टुकड़े कटवा लो। इन टुकड़ों को हथौड़े से जितना बढ़ा सको चौकोर बढ़ा लीजिये फिर इनको हिरन की खाल की एक एक तह में रख दो फिर एक चौरस पत्थर पर एक एक तह वाले थैले में रक्खो हथौड़े से चौकोर बढाओ तत्पश्[illegible]

उनको खोलकर कागज पर लगाओ तथा गड्डियाँ बना डालो। बस वर्क बनाने की सरल रीति यही है। इस प्रकार के चाँदी के वर्क भी तैयार हो सकते हैं।

मुलम्मा करना

असली चाँदी पाँच भाग, नमक का तेजाब सत्रहवाँ भाग, शोरा का तेजाब बीस भाग इन सबको बड़े चीनी के बर्तन में रक्खो, फिर सोना डालकर आग पर रखकर पिघलाओ। जब धुआँ निकलना बन्द हो जाए तो दूसरे बर्तन में उल्टा कर ठंडा करने को रख दो थोड़ी देर बाद जिस वस्तु पर मुलम्मा करना हो उसके तार में बाँध कर बर्तन में लटका दो तथा नीचे आग लगा दो। ऐसा करने से मुलम्मा चढ़ जायेगा। फिर धोकर साफ कर डाले।

लोहे की नीली मोहर

शलेक दो भाग, डियामेरेजट दो भाग, व रंग एक भाग, वैनिस टरपेन्टाइन एक भाग, अल्ट्रामेरीन तीन भाग। इन सबको मिलाकर बनाओ अगर हल्का नीला चाहो तो शुद्ध सल्फेट एक भाग और मिला दो।

गुलदस्ता हरा रखना

ताजा फूलों का एक गुलदस्ता बनाओ और उस

पर पानी में कारबोनेट आफ सोडा मिलाकर छिड़कते रहो तो गुलदस्ता बहुत अर्से तक हरा भरा बना रहेगा।

कपड़े पर की चर्बी दूर करना

लाइकर अमोनिया और अल्कोहल इन दोनों को बराबर लेकर मिलाओ। कपड़े के नीचे ब्लाटिंग पेपर रख लो, फिर स्पंज के टुकड़े इन दो चीजों से तर करके दाग पर खूब फेरो तो चर्बी निकल जायेगी तथा नीचे लगा कागज सोख लेगा।

लोहे को गलाना

इस्पात का एक टुकड़ा आग पर खूब तपाओ। जब लाल हो जाए तो थोड़ा गन्धक डाल दो ऐसा करने से लोहा पानी हो जायेगा।

बालक कवि होवे

बच का चूरन पीस के पिये दूध के संग।
खीर भात भोजन करे कविता करे निशंक॥

"ॐ सरस्वत्यै नमः" इसका प्रतिदिन १०८ बार जप करे जाए।

काला रंग बनाना

एक गिलास में हाईल्यूट हाईड्रोफोस्त आफ एमोनिया भर दो और दूसरे में एसीटेट आफ लीड का अ

धर दो फिर दोनों को एक जगह मिलाने से काला रंग बन जायेगा ।

एक अंगूठी और जले हुये रूमाल को साबित करके डबल रोटी से निकालना

दो अँगूठियाँ और दो रूमाल एक ही सूरत के लो। इनमें से एक अँगूठी को एक रूमाल के किसी कोने में बांधो और डबल रोटी गूँथे हुए आटे में रखकर तन्दूर में पका लो । जब तमाशा करना हो तो यह डबल रोटी अपने एक साथी को दे रक्खो कि छिपाये रहो । फिर समाज में आकर दूसरा रूमाल, जो पहले अँगूठी और रूमाल के समान हो तमाशाइयों को दिखाकर, जलाकर और उसकी राख बन्दूक में भरकर फायर कर दो । बाद में तमाशा देखने वालों से एक डबल रोटी माँगो तो तुम्हारा साथी बाजार की तरफ जाकर लौट आवे और डबल रोटी तमाशा करने बाले को देवे तथा तमाशा करने वाला वह रोटी तमाशा देखने वालों में से किसी एक आदमी को तोड़ने की आज्ञा दे दे । जिस समय वह आदमी डबल रोटी तोड़ेगा तो उसके अन्दर वह रूमाल अँगूठी सहित निकल आवेगा देखने वाले आश्चर्य करेंगे ।

कलाबत्तू बनाने का सहज रीति

पालिस (विशुद्ध) चाँदी का जितना चाहे उतना

पतला व मोटा तार जन्त्री में खींचकर और बाद में हथौड़े से पीटकर चपटा कर लोहार इलैक्ट्रिक बैट्री, अर्थात् विद्युत यन्त्र के जरिये पतला या मोटा सोना चढ़ाना चाहो चढ़ा लो और फिर उसको पीला करके बटे हुए पीले रेशम पर चढ़ा लो, कलाबत्तू बन जाएगा।

कलाबत्तू बनाने की दूसरी रीति

केवल चाँदी की कड़ी बनाकर ठोकना या और किसी चीज से ठोककर खड़बड़ी कर दे, फिर उस पर पारा लगाकर मोटा या पतला सोने का पत्तर लपेट कर आग में धर ताव दे इससे पारा उड़ जावेगा। सुनहरी पत्तर चाँदी से लिपटा हुआ रह जावेगा। अगर पत्तर कम हो तो उस रीति से जितना चाहे उतना लगा दो फिर उसकी कड़ी और बारीक सलाइयाँ बनाकर जन्त्री से तार खींचकर जितनी जरूरत हो उतनी लम्बी कर ले और हथौड़े से चपटी करे। पींछे उसको लेप और देकर चमका दे फिर सटे रेशम पर तार को चढ़ा दे। इस रीति से कलाबत्तू बनाने में परिश्रम बहुत नहीं होता।

अंडे का नाच तथा जल पर तैरना

मुर्गी अथवा हंस का, अंडा लेय मँगाय।
किंचित् पारा देय भर, सूक्ष्म छेद कराय॥
बन्द करे जब छेद को ऊपर मोम लगाय

जासे अंडा रस कहीं बाहर न निकल जाय ॥
यह सब धर राखे जतन पहले अपने पासा ।
जान सके नहीं कोई यह फिर करे तमाशा ॥
खेल करने के समय फिर कांच रकेबी लाय ।
थोड़ी आँच जराय के गरम करावे ताय ॥
अंडा को गरम कर धरे रकेबी मांहि ।
धरत धरत 'नाचन लगे देखे वही सराहि ॥
एक रकेबी गरम जल फिर देवे भरवाय ।
छोड़े तब अंडा यही, सब को वही दिखाय ॥
छोड़त ही तैरन लगे अचरज की यह बात ।
विस्मित सब देखन लगे धर होठन पै हाथ ॥

कुएँ में डाली अँगूठी को कबूतर में से निकालना जो कि बोतल में पैदा हुआ है

एक ही तरह के दो अंगूठी लो, इनमें से एक अँगूठी को कबूतर के गले में बाँध दो और काली शीशी काटकर उसमें बन्द कर दो तथा इसका मुँह सरेस आदि से बन्द कर दीजिये। जब खेल दिखाना हो, तब उसी बोतल को मेज पर रख दो फिर दूसरी अँगूठी को किसी आदमी को देकर कहो कि इसको कुएँ में डाल आवे। अब ऐसी बातें करो कि "यार सचमुच डाल आये। भला अब कैसे निक-

लेगी पर खैर देखो मैं परिश्रम करता हूँ शायद वापस आ जाए।" यह कहकर बोतल तोड़कर कबूतर निकाल दो। कबूतर के गले में अँगूठी को देखकर सब लोग ताज्जुब करेंगे।

देखते ही देखते एक पासे के दो पासे कर दिखाना

एक ही लम्बाई के दो पासे, जिसमें एक ठोस और दूसरा पोला हो टीन या लकड़ी के बनाओ। मगर पोला पासा इस कदर पोला हो कि जिसमें दूसरा ठोस पासा उसके अन्दर चला जावे। जब तमाशा दिखाना हो तो पहले ठोस पासे को पोले पासे के अन्दर छिपा दो, इसके बाद तमाशा देखने वालों से कहो कि यह एक पासा है, हम इसको रूमाल में रखते हैं। जब तुम पासे को रूमाल में रक्खो तब पहले पासे के अन्दर का ठोस पासा रूमाल ही के अन्दर से निकाल कर दो पासे कर दिखाओ बस इसी तरह दो पासे का एक पासा कर सकते हो।

सब्ज मोम बनाना

जगार एक औंस, मोम असली दो रतल, सौन रस इसप्टिराइन पाँच रतल और कुछ सुगन्धित तेल डालने से उम्दा सब्ज मोम बनेगा।

ताँबे का पानी बनाना

आधा किलो नीला थोथा बारीक पीसकर उसमें छह मेजर पानी डाल दो तथा छानकर चीनी के बर्तन में भर दो और उसमें आधा पाव सज्जी का तेल डाल दो। अब इसमें तांबा डालो तो ताँबे का पानी हो जायेगा।

जले हुये रूमाल का बन्दूक का फायर होतें ही साबूत होकर बोतल के अन्दर से निकालना

एक सफेद बोतल लेकर उसकी पैंदी काट डालो और उसकी पेंदी के बीच एक बारीक सूराख करो। इसके बाद एक छोटी मेज डेढ़ फुट लम्बी चौड़ी और ८ इंच ऊँची बनाओ और मेज के तख्ते की सतह धरातल के बीचोबीच एक गोल सुराख आर-पार इस अन्दाज से बनाओ कि उसमें ऊपर बयान की हुई बोतल पदी की तरफ से चावल की लम्बाई के बराबर फँसकर खड़ी हो जावे। जब तमाशा करना चाहो तो पहले एक बड़ी मेज के चारों तरफ चार इंच लम्बी लटकती हुई रंगी कपड़े की झालर (परदा) लगाओ बाद में इस पेंदी कटी हुई बोतल को छोटी मेज के सुराख में पेंदी की तरफ से चावल की लम्बाई के बराबर फँसाकर खड़ा करो फिर एक रूमाल उसके नीचे रखकर एक बारीक रेशम के सूत का एक सिरा

उस रूमाल के बीच में टाँग दो और दूसरा सिरा बोतल के अन्दर पेंदी के बीच से डाल बोतल के बीच वाले सुराख की राह बाहर निकाल कर अपने साथी को (जो जादू की झोपड़ी में छिपा बैठा है) दे दो इसके बाद तुम भी एक दूसरा रूमाल जो कि पहले रूमाल की सूरत का है समाज में दिखाकर जला दो और उसकी राख बन्दूक में भर वन, टू, थ्री की आवाज देकर फायर कर दो तो तुम्हारा साथी बन्दूक का फायर होते ही थ्री की आवाज के साथ उस रेशम के सूत को जल्दी मगर सहारे से खींचेगा तो यह पहला रूमाल रेशम की डोरी के कारण बोतल में आ जावेगा।

काँच के प्याले में चुरट का धुआँ फूँकने से घूमता रहे

काँच के दो गोल जोड़े (पल्ले) होते हैं। जब वे दोनों पल्ले जोड़े जावें तो एक पूरा गोला बन जाता है। अब एक पल्ले में सज्जी और सोडा पानी में मिलाकर लगाओ और दूसरे में हाइड्रोक्लोरिक एसिड (नमक का तेजाब) का लेप करो फिर दोनों पल्लों को जोड़ दो तो उन तेजाबों के संयोग से गोले में गुब्बारा उठेगा। तुमको चाहिये कि इसी मौके पर चुरट का धुआँ भी छोड़

दो, सो तमाशा देखने वालों को गोले के अन्दर चुरट का धुआँ घूमता दिखाई देगा।

काली लाख

बेनिस टरपेन्टाइन ग्यारह तोले, शैलेक ३२ तोले, कोलोफनी डेढ़ तोला और अन्दाज का कागज। इन सब को टरपेन्टाइन के तेल में मिलाकर तैयार कर लो।

चाँदी के जेवरों से काले दाग दूर करना

क्लोरेट आफ लाइम में थोड़ा-सा पानी मिलाकर कंघी या बुरुश से धो डालो, जेवर चमकने लगेगा।

जर्मन सिलवर बनाने की विधि

लोहा एक भाग, निकिल दस भाग, ताँबा बीस भाग सीसा दस भाग सबको मिलाकर गला दो, बहुत सुन्दर जर्मन सिलवर बन जायेगा।

मुहर के वास्ते नरम लाख

जरद राल एक भाग, सख्त चर्बी एक भाग, बैनिस टरपेन्टाइन एक भाग और जैसा रंग करना हो वैसा रंग डाल कर धीमी आग में पकावें।

सोने को सफेद करना

शोरा २ औंस, फिटकरी १ औंस, नमक १ औंस इन सब को बारीकपीसकर मिला लो और जिस सोने को

सफेद करना हो उसे पानी में भिगो कर ऊपर लिखे हुए चूर्ण में डुबाओ । पीछे ईंट या मिट्टी का ठीकरा ले ऐसा गरम करो कि लाल हो जाए, तब उसके ऊपर सोने को चिमटे से पकड़े रहो जब तक लगे हुए चूर्ण का पानी सूखे तब तक उसको दूसरी तरफ फिराओ । जब सूख जाये, तब सोना जर्द रंग के जैसा दिखाई देगा उसको साफ ईंट पर रखकर ठंडा कर लो, फिर एक बड़ी मूस लेकर उसमें साफ पानी, एक मुट्ठी पिसा हुआ नमक और पिसा हुआ टार्टर डालकर ७-८ बूंद नौसादर के तेजाब को टपका दो और जोश देकर सोने को उसमें उस समय तक डाल रक्खो जब तक वह सफेद न हो फिर उसको बाहर निकाल कूँची से धोकर साफ कर लो।

तलवार जोरदार करना

तेजाब फारूख ८ तोले और गरम पानी चार तोले मिला कर कर तलवार को ताव देकर उसमे बुझाओ तो तलवार जौहरदार हो जाएगी ।

पन्ना बनाना

आक्साइड आफ क्रोमियम दो ग्रेन, आक्साइड आफ कापर दो ग्रेन, सबको गलाकर धीरे-धीरे ठन्डा कर लो तो पन्ना बन जायेगा ।

सुनहरी स्याही

हरताल तबकिया चार तोले, सोने के वर्क ४२ तोले अक्षीर चौथाई तोला अन्डे की जरदी चार तोले इन सबको घोटकर गर्म पानी में मिला लो। थोड़ी देर पीछे जब ऊपर निथरकर पानी आ जाये तब उसे धीरे-धीरे निकाल लो। नोंचे की गोंद को कीकर गोंद में आठ दिन तक घोंटने के बाद शीशी में भरकर चार-पांच दिन धूप में रक्खो। इस तरह तैयार होने पर लिखो तो उम्दा सुनहरी स्याही तैयार हो जाएगी।

मूंगे को साफ करना

हाइड्रोक्लोरिक एसिड को पानी में मिलाकर काम में लावें अथवा एक बुरश से मूँगे को ताजे पानी में नमक मिलाकर धो दें और उसमें थोड़ा-सा साबुन का घोल मिला दो। क्लोराइड आफ़ लाइम मिलाने से अधिक सुन्दरता आ जाती है, उसमें धोकर धूप में रख देने से मूँगे सूख कर साफ-साफ हो जाते हैं।

कपड़े पर निशान करने की स्याही

जूंस आफ सुंलोस आधा बोतल, गोंद २॥ तोले। इन दोनों को मिलाने से अमिट स्याही बन जाती है, मोरडैन्ट मिलाने की कुछ आवश्यकता नहीं है। धोबी से कोरे कपड़े धुलवाने में यह स्याही बहुत काम देती है।

दूसरी विधि

सोने का वर्क लगाकर शहद के संग पिसवाकर एक कटोरे में रखकर पानी भर दें और कटोरे को खूब हिलाकर पानी गिरा दे नीचे जो पानी रह जावे उसको निकाल कर ऊपर की सी क्रिया दो बार करें फिर उसमें गोंद मिलाकर स्याही तैयारकरलें। इससे जो अक्षर लिखे जायेंगे वे सोने के समान होंगे। जो इन अक्षरों को पढ़ेगा वह बहुत प्रसन्न होगा।

लाल बनाने की रीति

पुटास १४४० ग्रेन, आक्साइट आफ मेगनीज ३६ग्रेन। इन सबको मिलाकर आग पर गला लो तथा चरख पर चढ़ाओ तो नकली लाल बनेगा।

हीरे की परीक्षा करना

हीरे की पुस्त पर जरा-सा असली मोम लगादें। अगर हीरा असली होगा तो पहले जैसी चमक देगा और यदि नकली होगा तो चमक कम हो जाएगी।

सब्ज और काली रोशनाई

जैकुट और माजूफल पन्द्रह भाग को दो सौ भाग पानी में चढ़ाकर एक घंटे तक खूब जोश दो, पीछे इसको छानकर पाँच भाग सल्फेट आफ आइरन और

चार भाग लोहे का चूरा डालकर मिलाओ, इसमें आधी बोतल नीम का पानी, तीन भाग सलफेरिक ऐसिड इन सबको मिलाकर तैयार करलो। यह रोशनाई लिखते समय हरी मलूम होती है परन्तु पीछे स्याह होती जाती है। यह लिखने में अच्छी होती है।

लड़ी जोड़ने की लेई

अवलाइड़ आफ आइरन चूरा कलई मंगाय।
पीस सान के नीर में, लड़ी लेहु जुड़वाय॥

पिस्सुओं को मारना

रात के समय एक बड़े बरतन में पानी भरकर उसमें दो बूँद सरसों का तेल डालकर और एक बूंद मिट्टी का तेल डाल दो फिर अपनी खाट के नीचे उस पानी से भरे हुये बर्तन को रख दो। सुबह पिस्सू उस पानी में मरे हुए मिलेंगे।

क्रोक्स सीमेंट

क्रोक्स सीमेंट को थोड़े से तीसी के तेल में मिला लें, अच्छा जोड़ने का मसाला तैयार हो जाता है।

कलाबत्तू से सोना चाँदी निकालना

पुराने कलाबत्तू को दीपक जलाकर ताँबे के चौड़े बर्तन में रखकर एक पत्थर से पीस लो। ऐसा करने से

रेशमी राख कलाबत्तू से अलग हो जाएगी, पीछे जल में धोकर साफ करलो और मुस में लगाकर लकड़ी से टुकड़े बनाओ तथा उनको काट-काट शोरे के तेजाब में डाल दे और शीशी को बालुका यंत्र में आधी गाड़कर उसे गरम करो तो इन टुकड़ों का पानी हो जायगा, जब खदकना बन्द हो जाये तब शीशी को निकाल लो, उसके पेंदे में जो काली गाद जम जाएगी उसके ऊपर से एक दूसरे चीनी के प्याले में तेजाब निथार लो और उस धोये हुए पानी को उस निथारे हुए पानी में डाल दो फिर उस काली तलछट को सुखाकर भुस मे गलाने से सौ नम्बर का खालिस सोना नकल आवेगा फिर उसको धोकर निकाले हुए पानी और तेजाब में और थोड़ा पानी मिलाकर उसमे साफतॉबे के थोड़े टुकड़े डाल दो ओर फिर उस शीशी को बालुका यन्त्र में रखकर आग दो, जब पानी का खदकना बन्दहो जावे तब नीचे उतार लो ।ताँबा गलकरउसमें मिलजायेगा और गाद नीचे बैठ जायेगी । ठंडा हो जाने पर तेजाब को दूसरे चीनी के प्याले मे निथार लो । उस नीचे की गाद को पानी से धोकर साफ कर लो और सुखा लो, साफ चाँदी निकल आवेगी ।

मुहर की स्याही

चन्दरस २५ भाग, आयल आफ लवेण्डर २००

भाग, काजल दो भाग, नील एक भाग, इन सबको मिला कर गला लो, मुहर की स्याही बन जायेगी।

दूसरी विधि

१० ग्राम मेजेन्ट लाकर ६० ग्राम ग्लैसरीन मिला दो मुहर छापने की उम्दा स्याही बन जायेगी।

तीसरी विधि

ऐसफेलसर एक भाग, काजल चौथाई भाग इन दोनों को मिला लो और छापने के स्याही के लिए जो अलसी का तेल तैयार किया जाता है उसका डेढ़ भाग उसमें डालकर पकाओ। जब तार बँधने लगे तब स्प्रिट आफ टरपेन्टाइन चार भाग मिला दो। जितना टरपेन्टाइन कम मिलाया जाएगा, उतनी ही स्याही अच्छी बनेगी। जिस पर एक बार मुहर लगा दोगे फिर वह किसी प्रकार दूर न होगी। ऐसिड या अल्कोहल के डालने पर भी मुहर वैसी ही रहेगी।

लकड़ी के छेद भरने का मसाला

जापानी तीसी का गरम तेल और तारपीन बराबर आधा स्टार्च मिला दो और स्पंज या ऊन लगाकर छेद बन्द कर दो, अगर उसपर अखरोट की वार्निश करो तो थोड़ा अब्बर मिला लो।

सोने का रंग हरा करना

नौसादर चार औस जंगार चार औस, शोरा दो ग्रेन, इन सबको खरल करके सिरके में मिला आग पर रख दो।

सब्ज रोशनाई

केलसिन्ड एसिडनाइट्रेट आफ कीमका में अन्दाज से पानी मिला दो, सब्ज स्याही बन जायगी।

हाथी दाँत या कप जोड़ने का मसाला

मछली का सरेस एक भाग ह्वाइट उल्लू दो भाग इन दोनों को तीस गुने पानी में गला लो और छानकर आग पर चढ़ा दो। जब छह भाग रह जाये तब तीसवां भाग गमनासिक आधा भाग अल्कोहल आधा भाग और ह्वाइट पत्रक मिलाकर उसमें शामिलकरे जब काम में लाना चाहो तब थोड़ा गरम पानी करके जोड़ दो।

संगमरमर जोड़ने की विधि

प्लास्टर आफ पेरिस फिटकरी के पानी में जितना मिल सके उतना मिला लेवे, भट्ठी में पकाकर रख छोड़ें। जब सङ्गमरमर को जोड़ना चाहो तो उसमें पानी मिला कर छोड़दो। जोड़के इस मसाले का रङ्ग सङ्गमरमर के समान ही होगा।

पारे को काम के लायक बनाना

पारा रांगा मिलाकर भाई, सम्पा दूध खरल करवाई।
बनि है तब यह ऐसा पारा, चाहे जो करिये तैयारा ॥

दूसरी विधि

लोहे की मंगवाय कढ़ाई। असली तेल डारिये भाई ॥
पारा डाल पकाओ उसको। पारा जमे उतारो उसको ॥
ऐसा पारा जमिहै भाई। चाहो जो लीजो बनवाई ॥

उपर्युक्त दी हुई दो रीतियों से चाहे जो बेला-बेली कटोरा-कटोरी बनाओ और यदि उनको बहुत कड़ा करना चाहो तो कुछ दिन तक बनी बनाई चीज को नीब के रस में डाल दो तो बहुत कड़ी हो जाएगी।

मुहर की लाल स्याही

सिंगरफ चार भाग, सल्फेट आफ आईरन एक भाग, सूख जाने वाला तेल थोड़ा सा डाल कर खूब मिलावें तो इससे मुहर की लाल स्याही बनती है।

नीम का स्वाद मीठा लगे

अजवाइन को खाय कर, पीछे नीम चबाय।
फिर कड़वा लागै नहीं, यह है सहज उपाय ॥

खजाने पर से साँप हटाना

गिरिणा अरु लाय चमेली, श्वेत आक लता में ले मेरीं।
मूली बच अरु लाय कटेरी, सबकू पोस कीजिये ढेरी ।।
पावन लेप कु करे जाय, बिच्छू सब जाय पराय।
बिना रोके ले आय खजाना हीरा अरु स्वर्ण बनाना ।।

दो कड़ी चीजों को पानी कर देना

नाइट्रेट आफ ऐमीनियम' अरु ग्लोवर साल्ट मंगाय ।।
डाल खरल के बीच में ले धीरे घुटवाय ।।
धीरे—धीरे घुटत सो अद्भुत अचरज दिखाय ।।
कड़ापन दूर हो पानी सम बन जाय ।।

जुंए भगान की विधि

श्याम धतूरे का रस ले लो। उसमें मरदन करलो।
वस्त्र एक बीच भिगोलो। सोते समय शरीर पर धरलो ।।
दीन पहर में देखो भाई। जुंआ एक रहने की नाहीं ।।

मेंढक पैदा करने की विधि

भादों में रविवार को, पीला मेंढक लाय।
उसके माथे दही को, दीजे तिलक लगाय ।।
धूनी गूगल ताहि दे, हँडिया में भरवाय।
रखिये अपने पास में सूखे पर पिसवाय ।।

वर्षा ऋतु आवे जो, वर्षन लागे नीर।
थोड़ी—सी वह राख ले, गेरे जल नीर।
दो घटे के बीच में अद्भुद दीखे खेल।।
लाखन उपजें मेंढक मचै रेल अरु पेल।।

गरम तेल से हाथ न जले

रजस्वला का लोदू लावे। तामें गदहा मूत मिलावे।।
बगुला की फिर चर्बी लावे। चुल्है चढ़ाकर सर्वहि पकावे।।
करे हाथ पर लेप जो य को गरम तेल से जलें न वाको।।

बिच्छू विष निवारण

बीट लाय ढिग राखिये मुरग कबूतर मोर।
आक मूल पिसवाय के धरो पीस एक ठौर।।
बिच्छू काटे जहाँ कहि इसकी धूनी देय।
धूनी लागत विष नशे मन पावत सुख होय।।

आग पर अन्न न सके

लकड़ी बम्बई लेय जलाई। गधा मूत दो उसमें मिलाई।।
जलती आग में दीजे डार। तो अभी अन्न न सिकने पाय।
सो मन लकड़ी देहु जलाय। तो भी अन्न न सिकनेपाय।।

जलती आग पर चलना

केला कन्द भाँगरा लावें। मेढक चर्बी फेर मिलावे।
मन्द आग पर लेय पकाई। पावन लेप अग्नि परजाई।।

लड़के लड़कियों की गणना करना

अगर कोई मनुष्य पूछे कि मेरे कितने लड़के और कितनी लड़कियाँ है तो उससे कहो जितने तुम्हारे लड़के हैं उनको दूना करके पाँच से गुणा कर दो और गुणन-फल में जितनी लड़कियाँ हैं उनको जोड़ दो जब वह ऐसा कर चुके तो तुम उससे जोड़ा हुआ अंक पूछ लो। जो ईकाई की ओर का अंक है उतना लड़कियाँ है और जो दहाई की ओर का अंक हैं उतने लड़के हैं बस बता दो।

मच्छर भगाने को विधि

जा दिन मच्छर रात में अधिक दु:ख दे देय।
तेल लौग को खाट पर छिड़कत जाय पलाय॥

खालिस दूध की पहचान

मोजे बुनने को सुई (क्रिरोंसिया) को नोंक को दूध के बर्तन में डूबा दो जो खालिस दूध होगा तो उसकी बूंद सुई की नोंक से लिहटी रहेगी अगर जरा-सा पानी होगा तो बूँद ढलक पड़ेगा।

मकान की दुर्गन्ध दूर करने की विधि

जिस मकान में दुर्गन्ध भर गई होंउसके किवाड़ एकदम खोल दो फिर एक लोंहे के बर्तन को खूब गरम

करके उस पर एक बूंद सिरके का रस डाल दो शीघ्र ही उस मकान की दुर्गन्ध दूर हो जायेगी ।

एक गोली और दो आवाज

शीशे की एक गोली लेकर उसे भीतर से पोली कर लो फिर उसमें चाँदी की बारूद भर के लकड़ी की डाट लगा दो फिर जैसे बन्दूक में गोली को भर कर चलाया करते हैं उसी रीति से उस गोली को भर चलाओ तो एक आबाज मामूली गोली चलातें समय होगी और दूसरी आवाज गोली निशाने लगने के पीछे होगी ।

गुलेल की गोली से आवाज निकालना

एक कागज में थोड़ी सी बारूद चाँदी की और मूँग के बराबर थोड़े कांच के टुकड़े डालकर गोली बनाओ और उस पर गिली मिट्टी चढ़ाकर सुखा लो। जब तुम गुलेल पर रखकर गोंली चलाओंगे या जमीन पर मारोगे तो लगते ही बन्दूक के समान आबाज होगी ।

सिंहनख-विष निवारण

जहाँ सिंह को नख लगे, कीजे यही उपाय ।
खंजा तेल कढ़ाय के, दीजे लेप कराय ॥

दूसरी विधि

लाल नीम अरु सेमर लाय लेय गरम जल सङ्ग पिसवाय।
नख अरु दंत लग्यो जहँ होय लेप किये दुख दूरही होय।।

दन्त कृमि हर विधि

गुँजा की जड़ लाय के कानन में बँधवाय।
बाँधे से कीड़ा डाढ़ के एक एक झर जाय।।

कान का लौर बढ़ाना

सरसों ओंगा और कटेरी, दूध मिलावे इनमें छेरी।
लेप करे लौर लौर में जोई, लौर बड़ी ताही छिन जोई।।

दूसरी विधि

गज पीपल बच कूट मंगावे, इनमें फिर असगंध मिलावे।
भैंस के घी में लेप मिलाय, लेप करत कान बढ़ जाय।।

आँख की रोशनी बढ़ाना

सुन्दर वर्षा ऋतु जब होय, लाय धरे जड़ सहित मकोय।
ताहि तेल में लेय पकाय, एक मास नितप्रति वह खाय।।
वाकी नजर हो जावे ऐसी, हो गिद्ध की दृष्टी जैसी।

आँख की जलन दूर करना

श्वेत सोंठ की जड़ घी में लेय मिलाय।
आँजे आँखन गुण करे, टपकत जल रुक जाय।।

भिलावा विष निवारण

तेल मिलावे लगे, फूट देह जो खाव।
माख अरु तिल पीस के, ऊपर देहु लगाय ॥

मन की बात जानना

रवि दिन जहाँ जू घुग्घू पावे। ताके काढ़ कलेजा लावे।
ताको धूप-दीप दे राखे। सोवत नार के हिरदय नाखे।
गुप्त बात जो मन में होई। ज्यों की त्यों कहे वो सोई।

मकड़ो का विष निवारण

केशर नाम मंजीठ अरु दोनों हल्दी लाय।
लेप किये तत्काल ही विष मकड़ी का जाय ॥

मूषक निवारण विधि

सरसों केशर अरु मटर घृत सम भाग मिलाय।
पीयत विष जाये नशय, इन्द्रजाल यह गाय ॥

पागल कुत्ता विष निवारण

आटा गुड़ तेल मिलाय। लेप किये कुकुर विष जाय ॥

दूसरी विधि

ओंगा की जड़ लेय मँगाय। पीस शहद संग देव चटाय।
मुर्गी बीट लेप कर दीजे। कुकूर विष तत्काल हरीज ॥

वृक्ष का पतझड़ कर देना

कूकर झिल्ली लाय कर, छाया माहिं सुखावे ।
सोंठ मिरच पीपर लेकर के तीनों कूट रखावे ।।
मेंहदी समफिर घोल नीर में बाँयें हाथ लगावे ।
ताही हाथ सो छुए वृक्ष को, तब यह खेल दिखावे ।।
है फल फूल पात अरु कोपल, सब जर परिह चो धरनी ।
धन्य विधाता कौतुक तेरा, धन्य गुरू की करनी ।।

दाँत के कीड़े को दूर करना

हरड़ा चूर्ण मिलाय के ताम्र पत्र छिन भर भुजवाय ।
गुटका बना दाँत तर दाबे, कीड़ी ठाढ़े सभी मर जावे ।।

वाणी सुधार

पीपर सोंठ बहेंड़ा लाय, त्वच अरु सेन्धा नमक मिलाय ।
गोमूत्र संग पीस पिलावै किन्नर संग सभा में गावे ।।

दूसरी विधि

मिसरी सोंठ अरु शहद मिलाय दिन में तीनबार जो खाय
भिन्न स्वरल गजवान वह नांगे, कंठ कोकिला सम हो जाय ।

तीसरी विधि

निगुण्डी को चूर्ण कर, तिल के तेल पकावे ।
आटे आही अनाजा औषधि, कोकिला सम सो गावे ।।

रक्तगुंजा कल्प

गुंजा की गति कहत कौतुक चरित अपार।
रावन्ते शिर कहत हैं सब कल्पन को सार।।
मारण तारण वशीकरण राजा मोहन अंग।
उच्चाटन यह कहत हैं बचन सिद्ध दल भंग।।
भूत प्रेत डाकिनी यक्ष बीर बेताल।
गुंजा की जड़ का सुना, कौतुक माया जाल।।
बहु चरित्र अगणित करे, सकल सिद्ध की खान।
जो चाहो सोई करो साधन केर बखान।।
दशमल आनन्द के हैं जुगत गुप्त अरु ज्ञान।
तो सतगुरु सो भेद लख साधौं सन्त सुजान।।
अब याके साधन कहत यथा योग्य उपदेश।
जो साधे सो सिद्ध करे, कसर नाय लवलेश।।
पुष्प होय आदित्य को तब लीजे गुंज मूल।
शूकर बाला रोहणी ग्रह सु होय अनुकूल।।
कृष्ण पक्ष की अष्टमी हस्त नक्षत्र जु होय।
चौदह स्वाती शतभिषा पूजा ले वह सोय।।
अर्द्ध निशा कारज मने, को करे संज्ञा खोय।
धूपदीप करलो जो काहू नर नारी विषहोय।।
विष उतरे झट जड़ी जो पीस पिलावे धाय।

जो घिस लावै भाल पर सभा मध्य नर जाय ।।
मान मिले अस्तुति करे सब ही पूजे पाय ।

मेढक विष निवारण

त्रिकुटा अरु चौलाई पिसवावे, छान पिये मेंढक विष जावे

चित्र के रोकने की विधि

बालक पैदा होय जब, ताकी झिल्ली लाय ।
रखिये अपने पास में, पहले ताहि सुखाय ।।
चित्र सारा जाय कर, दीजे खेल दिखाय ।
झिल्ली धर के आग पर, धूँआ देव उठाय ।।
धूआ लागत ही चित्र में, आँसू बहुत दिखाय ।
फिर गूगल की धूनी दीजे, सूखे आँसू अरु सुखलीजे ।।

बहुत चलने की विधि

पहले सेत करारा ढूँढ़े ताकी मूल मंगावे ।
काकमूल जो जंघा सरफों का दोनों सेतु जो पावे ।।
बाँध पोटरी इन तीनन की, जाकी कमर बंधावे ।
चलें पंथ सो जहाँ चलावे पशु पक्षी नहि पावे ।।
जुनु तन जान जो चूके नहीं, तब यह करे तमाशा ।
कोस पचास जाय फिर आवे, बीच न माँगे बासा ।।

—:o:—